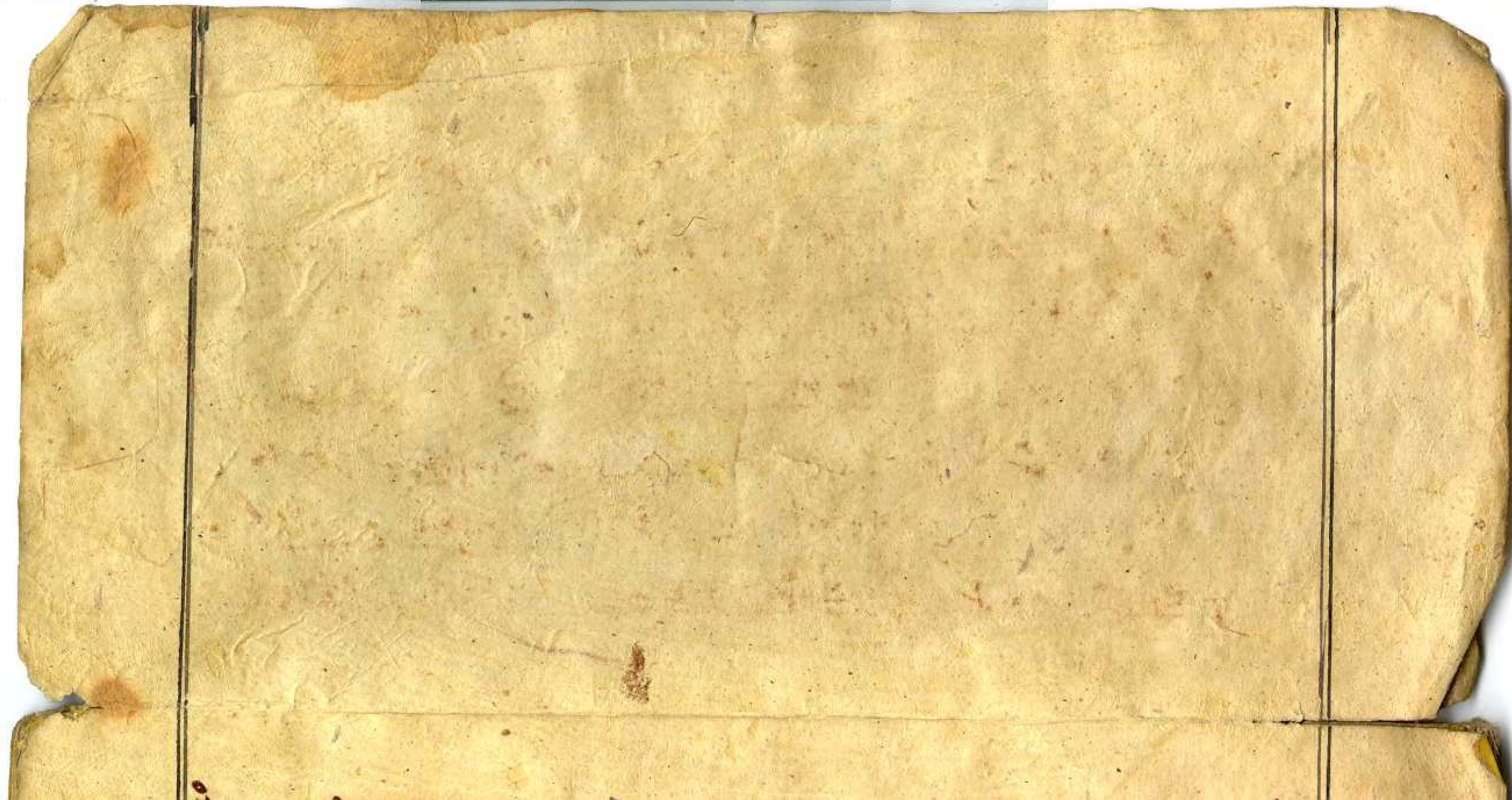


१८ वर्ष के चमन शुक्ली लाला पुष्पावरोहणी वैद्य

२५

शुक्ल चमन

3156



ॐ नमः श्रीगणेशाय ॥ ॥ सकलांताललाचकं ॥ आचमन ३ ॥ सूर्यार्घ्या
ये ॥ अयादि ॥ वाक् ॥ काष्ठपरगभा अस्मत्सकलयत्रिवाप्रसायथ
॥ कृत्तुलयायिकामः श्रीः ॥ दवगासुप्रसन्नदो जावर्वबंधनस्व
र्धुजा निवृत्त्यावजादनयथामिलितयचानं धृजकगुं श्रीसूर्याय अ
र्घ्यनमः ॥ वृथ्यनमः ॥ गुन्मधुलधृजा ॥ न्यासमूलं ॥ लंखधलधृजा ॥ अ
र्घ्यधृजाथ्ये ॥ लंखलखनहाये सकरनी ॥ ॥ देवस्नानयाचकं ॥
हायां जलस्नाने ॥ सा ५५. सा १५. यं चासृग. गंगजल. स्नानयाक ॥

ॐ इन्द्रधनुर्गङ्गासर्वनामधर्मयुतं ॥ स्त्राययद्विधिनाद्वं
ॐ उद्विषयनापय ॥ धुङ्गजलनस्नानं ॥ ॐ मदद्वयायमलिनं
लिंगं यनकर्मक्षेत्र ॥ गस्मास्नानं कत्रिव्यामिधुङ्गीगजलनच ॥
गीखधुचगुस्मसिन्धुनकाय ॥ ॐ अष्टगंधसुगंधदीनयथाक्षेत्र
नूलैयनं ॥ गृहोद्वेदवद्वेदसिन्धुनमदिनाक्रमं ॥ अष्टगंधाहाल
ज्जंकाद्विष्टय ॥ ॐ अष्टगंधसुगंधदीनयथाक्षेत्र ॥ यथा
कथास्यहं गुह्यं गृहोद्वेदवद्वेदसिन्धुनमदिनाक्रमं ॥ ॥ मालसाकर्तुयगा-अष्ट

उभय-वो. नवलनय ॥ ॐ कर्तुस्त्वनयुगलं यंच वधुधुजा कर्म ॥
वमुचिनामसि युगं डादनं बलिगृह्णतां ॥ ॥ त्वाकस्वान-माल
स्वानकाय ॥ ॐ नानावयसुगंधदीनमालां च युं धिता निच ॥ मया
निवदिगं गुह्यं गृहायेय नमः ॥ ॥ सुवधुजातिवयस्य. धनु
लयस्य. त्रिसेधायस्य च ॥ ॐ शिवप्रितिकनं वयस्य धनु
नागवयसं ॥ मयानिवदिगं गुह्यं गृहायेय नमः ॥ वृजाया
य ॥ ॥ वलि. पाण. मालसा. अर्घ्यां हरं वयसं ॥ अर्घ्यां हरं वयसं ॥

यनयाय ॥ निरुपकर्म ॥ आत्मयुजा ॥ यं ववलि ॥ देव आवाहन ॥
निरुपकर्म ॥ मालका युजायाय ॥ ॥ विरहो व युजायाय ॥
न्यामः ॥ हुः अमुयदुद ॥ क्रो अंगुष्टाया नमः ॥ क्रो ते उनी
त्या नमः ॥ हुः मथ माया वषट् ॥ हुः अनामिकाया नमः ॥ क्रो
क निष्ठाया नमः ॥ क्रः कजरतनष्टाया अमुयदुद ॥ उव
दुदयादि ॥ ॥ देव आसनयुजा ॥ उव आभग हो क ये नमः ॥
उव आसनाय नमः ॥ उव आसनाय नमः ॥ ध्यान ॥ उव कवकुं प्रि

न प्रंच नागवृक्षुलमधुगं ऊटाहूग धधिवृडं स्वतवधुसूः मारिगं ॥
धाडधधुऊंचत्राकानलाधुवयनमध्वजं ॥ उहुँबाहूचृययूयंडम
नृप्रिधूलमवच ॥ पिटलीधजवडांचकर्तिकाचाकुमालिका ॥ त
थवामनृययूयंखडाङ्गंयममवच ॥ नागंधनसुधधंलूकया
लंचकमधुलसहसुसूर्यसंकाशंकागारिन्नंचनृय ॥ वृ
यातूढसमास्थायनृयगीननसंयुगं ॥ ऐजवंनृययूयंचसर्वालं
कालसारिगं ॥ प्रवंध्यात्वामहादेवंनाटकार्यसुसिदुय ॥ मान

वानोहिगार्थसर्वत्रिविनाशनं ॥ उद्धमनयूयं नमः ॥ आवा
हनमडाकन ॥ याथादिरथ ॥ चन्दनादिच्छाय ॥ यूय्य-धूपदीप
नेवद्य-गाम्बूल-नानादुल ॥ आदिमालकासकतांशुय ॥ न
र्यक्ष ॥ ॥ यथांजुलिनय ॥ उद्धम ॥ श्रीनृत्यस्वधनमहादेव
वायसु ॥ नृत्यलक्ष्मी ॥ होकिमहिमा ॥ यक्षीवाह ॥ ३ ॥ व
लि ॥ ॥ त्रिशूलयानिमडा ॥ यत्रिवृत्तानयुतनं ॥ उद्धमहृद
यादि ॥ यानमः ॥ वलि ॥ उद्धमश्रीजागदित्यानमः ॥ वलि ॥

ॐ हूं षट्पदा किनीत्या नमः ॥ वलि ॥ ॐ हूं हनुकादि नमः ॥ व
लि ॥ ॐ अं अ सिगां ग दि अष्टमाद क र्या नमः ॥ वलि ॥ ॐ हूं न
दि न नमः ॥ ॐ हूं गृं गि न नमः ॥ ॐ हूं माहा काला य नमः ॥ ॐ ग
ध य ग य नमः ॥ ॐ वू मा ज्ञा य नमः ॥ ॐ की र्ति मूं खा य नमः ॥
ॐ द वी नमः ॥ वलि ॥ ॐ लूं लूं नुा दि द ही ला क या ल र्या नमः
वलि ॥ नृ त्य मू डा ॥ माल क पू जा ॥ ॐ हूं श्री नृ त्य ध्व मां मां भ य म ग
ध य नि वा नं त्यः श्री पादु कां धू उ मा मि नमः ॥ ३ ॥ वलि या नि मु डा ॥

सिद्धयुक्तं ॥ मूलं ॥ अथ ॥ मूलं ॥ बलिमूलं नियुक्तं ॥
चन्द्रनादिधूयदीयने वंशयकां नदुलज्वयग्वभलमालं वसकगां क्राय
तयधे ३ ॥ ॥ गायोहाल ॥ उं सुप्रतिष्ठाएवकु ॥ उपयाय ॥ १०८ ॥
मधुलकागुयाय ॥ गुप्तस्थानमेः ॥ थगानियुक्तं ॥ मालकसा
गवान ॥ विरहाय ॥ रसांगंचतुमोतिरुजगयतिगलेहयितंकी
क्रियासा नदि ॥ अनाद्यना ॥ अतिसहगलेन नदिनादावमाने ॥
यादेयां सव्यमानदृतिगलयमुखं सिद्धिदोचः संक्षीमान्साएवंगुह

वगुह्यहं नंरुग नंरुग नाथं ॥ सर्वमंगलमांगल्यक्षिप्रसर्वार्थसा
धिकक्षेत्रं स्थगाम्बक (गोत्रीनां नायविनममुग ॥ अयं नाथस
हमा विबोयनरुह त्रिसंमया-दासाहमिति मां मत्वा नमस्वयनम
नी ॥ काष्ठपय (गगनामगुसकलवत्रिवा नस्ययथमभाकुाकूठ
लप्रायिकामः शीयनमंश्चन ॥ ददवगासुप्रमन्नदानावर्षव
धनसुवर्षुजानियुव्यावनाहनयथमिति गायवात्रक्षयूजा
मंष्टुर्षु विरधेगसर्वत्रिधियत्रिष्टुर्षु ममु ॥ साष्टांगप्रक्षमनाय

कर्पूरदीपकयुक्ते ॥ दक्षिणामूर्त्यै ॥ सकलान्दवजाये ॥ धुगुधामुदा
लं सुपूजाया लवन ॥ ॥ हायां लाहदाग सुपूजा ॥ नित्यकर्मस्थं
मालं कोपूजायाय ॥ विदग्धसुपूजा ॥ न्यासः ॥ हु-भ्र-मु-य-रु-ट
ॐ-ह्रीं-दिवडुंगन न्यासः ॥ पूजायाय ॥ नै-आ-भ-न-श-क्वा-दि-त्या-न-मः
नै-य-प्रा-म-ना-य-न-मः ॥ नै-आ-वा-ह-ना-दि-चं-द-ना-उ-ग-य-य-न-मः ॥ स्वा
न-चं-द-न-सिं-ह-न-ज-गं-का-य-य-य-दी-य-ने-व-श-ॐ-ह्रीं-दि-माल
का-य-य ॥ उ-यां-ज-लि-पूजा-या-य ॥ नै-कीं-गी-र-वुं-शी-या-गां-व-ना-य-शी-वाइ

ॐ

कायूज्यामिनमः ॥ ३ ॥ मूलं पूजा ३ ॥ तायहाल ॥ सें सुप्रतिष्ठावनदारवतु
उपयाय ॥ १०८ ॥ मधुलुदयकंयालकसीपवानः ॥ सकस्योकेऽगड
गने ॥ दक्षिणकाय ॥ देवजाय ॥ न्यासलिकाय ॥ मंडलयास्याकुय ॥
नोसिये ॥ ॥ ॐ निलारुद्रागपूजा ॥ ॥

श्रीजानेश्वर्यै नमः ॥ ॥ सकलांताललाचके ॥ आचमन ३ ॥ श्रीसू
र्याद्यै ॥ अर्थादि ॥ वाक्य ॥ काश्यप (गात्र) अस्मत् सकलवर्तिवात्र
यथा ॥ कुटिलश्राफिकामः ॥ श्री ॐ हृदवतासुप्रन्नदाजावर्धवं
नसुवर्चुजातिपुष्पावगीहनयथा मिलितयचात्रधैयुजनकर्तुः
श्रीसूर्याय अर्धे नमः ॥ धूर्ये नमः ॥ गुग्गुलुलक्ष्मणा ॥ न्यासयाय मूलं
लंखलक्ष्मणा ॥ सोधनमूलं ॥ ध्वलंखनसकरनं ॥ ॥ देवमानये
चक्रे ॥ उल्लसन्न ॥ जेगजाश्राः सलिलं (हृदं) नानायावयुक्षणेन ॥ धूग
हय

कृत्यागयुक्तानां स्नानार्थं गस्तु ठी वरुण ॥ साइइ-सा (धो) माघल कसि
 साखन स्नानं ॥ उँदु म्भद धिघृगंग वंसर्क जा मधु सयुगं ॥ स्नाययद्विधिना
 दवं ०० दु शिवयुक्ता ॥ अलि मां मन स्नान ॥ उँ सुना हा कि शिवा मां संगत्सं
 मिलिग मुरुमं ॥ मुद्धि सिद्धि प्रदं युश्च मलि स्नानं ददाम्यहं ॥ पुनजल
 स्नानं ॥ उँ मद्द ह वाय मलिनं क्षालि गेय न कर्म भा ॥ ग स्नानं क विव्यामि
 शुद्धी गजलन च ॥ ॥ श्री रव शु च पुष्प सिद्ध न च्छाय ॥ उँ ०० दं म
 लय संरु गं चंदनं हि म सी गलं ॥ वीन जा ऊ यं जी जिहं गगु गृहा ल म म सि

इय ॥ उँ यधुवर्द्धन कृपस्य सांछनं हिमसीतलं ॥ गृहागवीनवीलशि
सिद्धयं वर्गदायकं ॥ ॥ अङ्गनः द्वादस्याः उङ्गकाः दृष्टिगयः ॥ उँ
अङ्गनं कृषुदूर्वांच उयवीगसूदृष्टिकं ॥ पुष्टीकयाम्यहं पुष्ट्यंगृहा
शयनमध्वनी ॥ ॥ कर्षुयताः यंचयताः अङ्गुलः चोः नवलः
एङ्गुजाः मालसागय ॥ उँ कर्षुहमवयुगलं यंचवर्षुध्वङ्गुलमं ॥
वमुचिनामवियुगं उदनें वलिगृष्टनां ॥ ॥ स्वाकस्वानः मा
लस्वाननस्वाकस्वानः ॥ आदिक्काय ॥ उँ नानावृष्यसुगंध

दीन मालांच गुंथिता निच ॥ मया निव दिनें पुण्यं गृहाये यत्र मंथ
नी ॥ सर्व गुंथानि मय्युक्ताय ॥ ॥ वागासन चायं ॥ कुलन कलि
मिया ॥ यव संमिग माने न गनु नाथी गवा सके ॥ सर्व सिद्धि
ल प्राकं सर्व याय उं यत्र ॥ ॥ गाय होले ॥ गजाय उं यने न म्यं
ना अ प्राक् किल प्रदं ॥ गृहा गद हि म चि कं शुंर का निव य प्र ल
वलि. याय. सगं ॥ माल को वा गा सन चायं ॥ माल को सकं
चायं ॥ ॥ नगः पूजा माल रं ॥ ॥ आचमन ३ ॥ उल साध

नमूलं ३ ॥ हा वा या १० थं वा व्य क या डा सूर्या र्घ या थ ॥ गुत्र मधु
लघु जा ॥ न्यासः या थ ॥ अर्घा ट ग सा अर्घा पूजा म द सा गा हा
व स नित्य कर्म १० थं ॥ अं ख पूजा ॥ पूजा र ल १० धन मूलं १० ॥
गी र्थ ने व छा दि १० धन या थ ॥ वायु स्थाय नं नित्य कर्म १० थं ॥
आत्म पूजा ॥ गुत्र ग र्थ ३ ॥ थ डा वि न सि पूजा नं मूलं ३ ॥ व व
लि विय ॥ ने व य छा थ ॥ विन्दु ग र्थ ३ ॥ ॥ मह नि स्थाय नं
मली ल स च क व या व अर्घा शिख या लं ख न हा य रु ध की ॥

चंदनं विकीर्णं चाथ ॥ दधूं कुं चाथ ॥ ८६॥ धनयाथ ॥ मू
लं १०० दध्नि यथावत् ॥ १०० ॥ १०० ॥ गालगया चार्कं महानि
रुय ॥ पूजायाथ ॥ १०० ॥ सर्वज्ञ नमो हि नमः ॥ ३॥ वसि
धूयं धनद्वी आवाह नयाथ ॥ मालिनीयदय ॥ ॥
यंचवल्लि विय ॥ नेवशचाय ॥ मूजाकं न ॥ विन्दुगर्व
३॥ ॥ यशानि त्यकर्म ॥ १०० ॥ वलि मूलत पूजा ॥ ॥
वि० ॥ ययूजा ॥ न्यासः याथ ॥ १॥ ॥ अमुकयदुदू ॥ १०० ॥ यादि ॥

3156





इकोष्टुज्यामिनमः॥३॥ वलि॥ उँधं धमादिस्था नमः॥ उँ अँ
प्रयागदिब्रह्मास्थदिस्था नमः॥ वलि॥ उँ भू सितांगमदिस्थान
मः॥ उँ नृपचक्षुदिस्था नमः॥ वलि॥ ॥ रूपा नव्ये जीष्टुजनं॥ उँ
यद्वासनायनमः॥ उँ प्रगासनायनमः॥ ची स्यां जा कि कया अ
द्या मथुना गय॥ उँ आवाहनादिचंद्र नातु गव्यू नमः॥ य
थां जलि॥३॥ उँ द्रां श्रीं पुं मां मां मां द्यां श्रीं रूपा नव्ये नमः
श्री वा इकोष्टुज्यामि नमः॥३॥ वलि॥

[illegible]

य. नैव प्रच्छाये ॥ कल. ग्वय. ज्वाल माल कृष्णाय ॥ तर्प
ध ३ ॥ गाय हार ॥ उं सप्रगिष्ठा वनदा एव तु ॥ ॥ उययाय
॥ मधुलदयकं स्त्रीययाय ॥ ॥ धडा माल को सुप्रवान ॥ ॥
विशय सुप्रवान ॥ सत्र विन्दु निर्णय जा सर्व एव सुप्रिगा ॥ योगं
वन धं संयुक्ता एजं स्त्री न ध्वनीय नो ॥ आवाहनं न जाना मिन जाना मि
वि सर्जनं पूजां चा मिन जाना मि त्रुम ध्वज गदी ध्वनी ॥ का ध्वय रम्भ
गा स्तुतु सकल य त्रिवा ना ली वर्य वं धन सुवर्णु जा नि प्रस्था व नो हन

यथा मिलिना यथा प्रसूज न संपूर्व विष्णो गत्सर्व विधि यत्रिष्ट
 र्भु मस्तु ॥ सकस्या नं पूजा याये ॥ नमस्कात्रयाय मालका दान ॥
 तर्पण याय ३ ॥ ॥ वायं पूजा ॥ च विमिलिता वलिंदुता न तय ॥
 चंदना दिक्काय न वया दिक्काय ॥ यया ॥ जलि ३ ॥ तुं कालि २ महाका
 लीला हृदयुय नमः ॥ ३ ॥ मूलं ३ पूजा ॥ श्रीं लक्ष्मी नायाय ॥ उमा नर
 ष्वने वागी ६ व श्री लो नमः ॥ जय श्री १० ॥ मुद्रा ॥ ३ ॥ ख ॥ यस्वत्सु ना
 षाय ६ किं कार्याय तत्तय ॥ यष्टुं दत्तया ६ श्रीं ख ॥ जनाथ नमो मस्तु

म॥ ॥ इगुयूजा ॥ पुगिलाहागसिचक ॥ न्यासयाथ ॥ अर्घ्या
पयालं खनहाथ रुद्धकं चयुसं स्कात्रयाथ ॥ शिरथिया जाल
धनयाथ ॥ यै १० नै १० वै १० ॥ मूलं ३ ॥ वंरधनुमुद्राकन ॥ जैय शु
वस्मानं नमः ॥ चंदन सिंह ग धूप दीप नै वं काये ॥ पूजा ॥ जैय
शुव नमः ॥ जै कागवलये नमः ३ ॥ जै चं य शु मा कुं नमः ३ ॥
मूलं पूजा ॥ जवद्रु सयग समं ग कन ॥ जैय शु वा गाय विघ्न ह वि
ध्व क मायि धी महि ग न्नाः ॥ जीव पु चा दयाग ॥ य शु वा ध याथ

यज्ञार्थं वलयः सृष्टा स्वयं स वस्वयं उवा ॥ अगस्त्यं दद्यात्
यगस्मा यव (५) वधः ॥ चीत्वा जाकि सिरसतये ॥ संकल्पः ॥ ची
त्वा जाकि कया लं खतया ॥ अथ स्वतवरा हत्यादि ॥ काष्ठं य
गमय अस्मिन् सकल यत्रिवात्रा नमं यथा ॥ कुक्कुटं लवणं पि
कामः शीघ्रं मध्वं सुप्रसन्नदात्रा वयं वंधनं सुवर्णं जागिषूया
वत्रा हनंती ॥ ॐ हृदं वनायुजं न कर्म निशीलानं ध्वजो दव्ये सां
मये सगं यत्रिवात्राये न वसहिगाये ॥ ॐ दं दं गं वद्रि देव

तं तुल्यः महमुत्सृजं ॥ गानं ॥ मूलमन्त्रकन ॥ दक्षिणकाय ॥
मृहायकं ॥ स्याय ॥ ॥ वृकनकाय ॥ कर्पूरदीपव्याय ॥ सम
यन्त्राय ॥ देवजाय सकस्या ॥ तयम ३ ॥ उक्ता नैकदेवगीर्वादे
याये ॥ सगुममाहिनीकाय ॥ चाकलयुगानन ॥ मालकक
र्मयाय ॥ ॥

[illegible]

निनी॥ सुनत्मानिक्कमकूटा। सप्यकुलुदपरी। सप्यहानकताटा
 प. सप्य केकननूपूर्ण॥ सिहचर्मपत्रीधन सप्यमिषनमलिनी॥
 गजचर्मचर्गरीम. ६॥ ६॥ केकनगणधनी। पंचवकुलवानुटी. दशवा
 दंष्ट्रिलाचनी। कपालमालाएवरी॥ प्रज्जटकधनिनी. पाणीकु
 लधनन्देवं. सनसूक्तवधनिनी॥ कपालखट्टाकधनी. वनदारणपा
 लिनी. रीमानगप्रतीकाणी. सुनगाधनरासूनी. वृक्षतुविषयनदः।
 दशवापिदुल्लरं। नगरं ^{नववंपूर्ण} स्वकुन्दपनिकीर्तिनी॥ ६॥
 नपूष्यं॥ आवाहनादि॥ यायांजलि॥ नृंजकुं कुं कुं ग्रीवास्वकुन्द

निनीयपू॥ ६॥ निनीयपू॥ ६॥
 निनीयपू॥ ६॥ निनीयपू॥ ६॥











